बनास जन

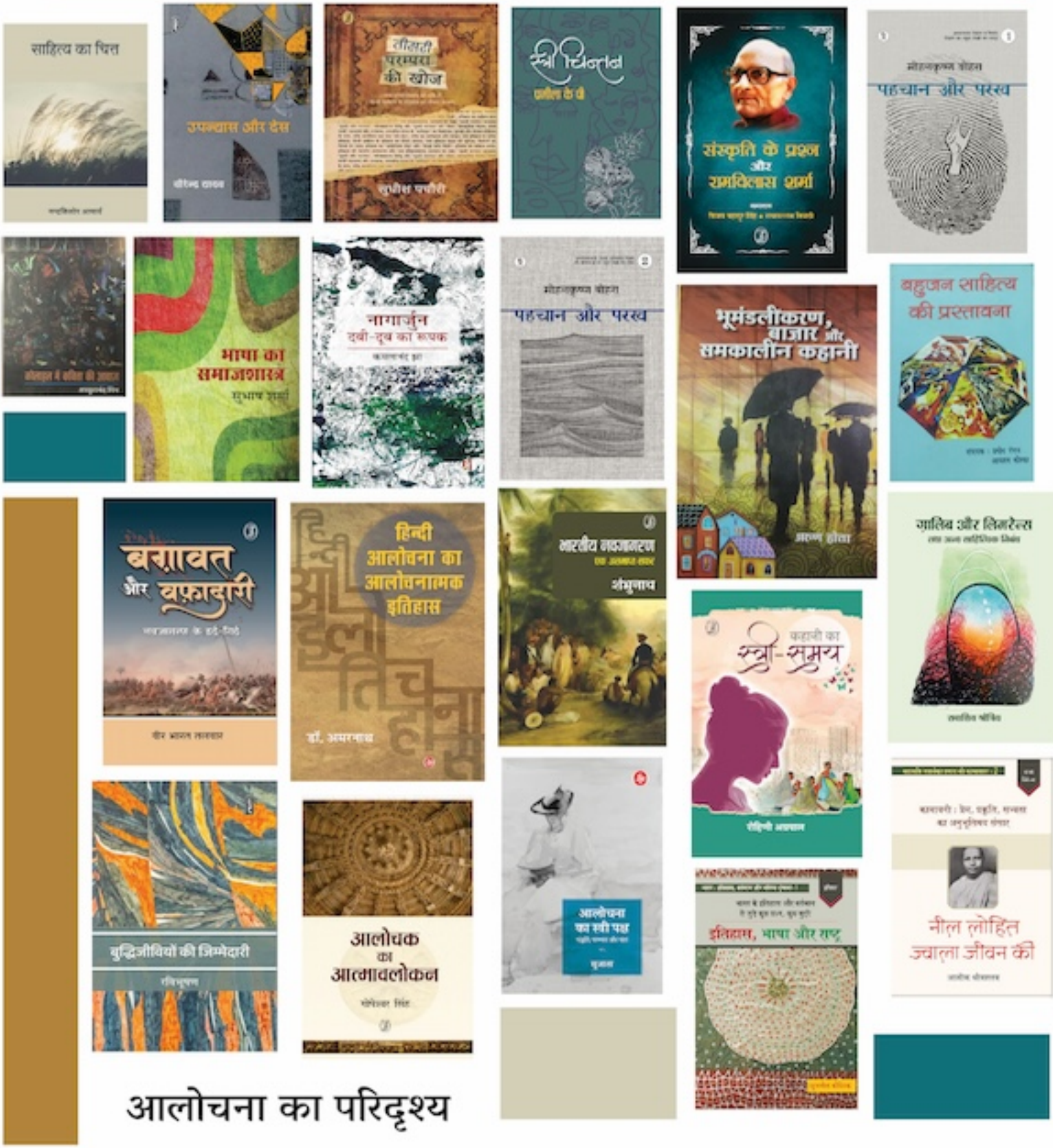

आलोचना का परिदृश्य

बनास जन

साहित्य-संस्कृति का संचयन

आलोचना का परिदृश्य

परामर्श : प्रो. काशीनाथ सिंह, वाराणसी
डॉ. ममता कालिया, दिल्ली
डॉ. दुर्गाप्रसाद अग्रवाल, जयपुर
प्रो. माधव हाड़ा, उदयपुर
श्री महादेव टोप्पो, राँची

सम्पादक : पल्लव

सहयोग : गणपत तेली, भँवरलाल मीणा

कला पक्ष : निकिता त्रिपाठी

सहयोग राशि : 50 रुपये (यह अंक)–डाक द्वारा मँगवाने पर–85 रुपये
100 रुपये (संस्थागत)–डाक द्वारा मँगवाने पर–125 रुपये
6000 रुपये–आजीवन (व्यक्तिगत)
10,000 रुपये–आजीवन (संस्थागत)

समस्त पत्र व्यवहार : पल्लव
393, डी.डी.ए., ब्लॉक सी एंड डी
कनिष्क अपार्टमेंट, शालीमार बाग, दिल्ली-110088
ह्वाट्सअप : +91–8130072004 (केवल लिखित संदेश हेतु)
ई-मेल : banaasjan@gmail.com
वेबसाइट : www.notnul.com

कृपया रचनाएँ भेजने के लिए सिर्फ ई-मेल का उपयोग करें। आग्रह है कि इस संबंध में पूछताछ न करें। 'बनास जन' में सभी रचनाओं का स्वागत है।

नोट : प्रकाशित रचनाओं से संपादक की सहमति अनिवार्य नहीं।
संपादन एवं सह संपादन पूर्णतः अवैतनिक।
समस्त कानूनी विवादों का न्याय क्षेत्र दिल्ली न्यायालय होगा।

स्वामी-संपादक-प्रकाशक-मुद्रक पल्लव द्वारा 393, डी.डी.ए., ब्लॉक सी एण्ड डी, कनिष्क अपार्टमेंट, शालीमार बाग, दिल्ली-110088 से प्रकाशित और प्रोग्रेसिव प्रिंटर्स, झिलमिल इंडस्ट्रीयल एरिया, जी.टी. रोड, शाहदरा, दिल्ली-110095 से मुद्रित।

BANAAS JAN
Peer Reviewed Journal
(A Collection of Literature)

ISSN 2231–6558

अनुक्रम

अपनी बात 4

परंपरा और इतिहास

आलोचना की निगाह में भारतीय नवजागरण	संजय जायसवाल	6
उन्नीसवीं सदी के नवजागरण के अन्तर्विरोध एवं उसका ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य	राम विनय शर्मा	14
भारत के ऐतिहासिक अतीत व वर्तमान से संवाद	सौरभ सिंह	22
हिन्दी आलोचना जगत का अनिवार्य दस्तावेज	बीरेंद्र सिंह	26
परंपरा, इतिहास दृष्टि और उत्तरआधुनिक चिंतन	अजय चंद्रवंशी	30

अस्मिता

समकालीन समय में नारीवादी विचार	स्मिता अग्रवाल	37
स्त्रीवादी आलोचना की नई जमीन	मधु सिंह	41
बहुजन साहित्य की प्रासंगिकता	शशांक कुमार	45

विभूति

प्रसाद की काव्य सृष्टि की एक अन्तरंग यात्रा	जीवन सिंह	48
नागार्जुन-साहित्य का सम्यक् विश्लेषण	सुशील कुमार सुमन	56
रामविलास शर्मा की सांस्कृतिक बहुज्ञता	नीलोफर उस्मानी	60

कथा साहित्य

उपन्यासों के देस में	अरुण होता	64
आलोचना की परिधि से एक हस्तक्षेप	अनुपम कुमार	69
समकालीन कहानी पर गंभीर विवेचना	सुलोचना दास	73
उनकी लेखनी से बहता है समय का झरना	ममता दीपक वेर्लेकर	77

कविता

कोलाहल के विरुद्ध कविता के पक्ष में	गोपाल प्रधान	81
कविता की हार्दिक विवेचना	ललित श्रीमाली	85

कुछ और भी

साहित्य के चितेरे : नंदकिशोर आचार्य	प्रज्ञा त्रिवेदी	88
भाषा का समाज और अध्ययन	प्रभाकरन हेब्बार इल्लत	92
समाजवादी विचारों से प्रभावित आलोचना	भावना मासीवाल	97
बुद्धिजीवियों की जिम्मेदारी का सवाल	अंकित नरवाल	101

अलविदा शर्मा साहब

डॉ० के.सी. शर्मा नहीं रहे। 12 अक्टूबर 2023 को मस्तिष्क आघात ने उन्हें हमेशा के लिए मौन कर दिया। चित्तौड़गढ़ राजकीय महाविद्यालय में अध्यापक के रूप में अपना करियर प्रारम्भ कर वे प्राचार्य पद से सेवानिवृत्त हुए। सेवानिवृत्ति के बाद उन्हें बेगूँ में स्ववित्त पोषित योजना में नये नये खुले शहीद रूपाजी करपाजी महाविद्यालय का प्राचार्य बनाया गया जिस पर वे लगभग दो तीन वर्षों तक कार्य करते रहे। समाजशास्त्र उनका विषय था और समाज में बौद्धिक-सामाजिक हस्तक्षेप उनका प्रिय कार्य था। वे स्वयं सेवी संस्था प्रयास के अध्यक्ष भी रहे और विगत लगभग दस-पन्द्रह वर्षों से साहित्य-संस्कृति के संस्थान संभावना के अध्यक्ष थे। जब उन्हें संभावना का अध्यक्ष पद स्वीकार करने का आग्रह किया गया तो उनका कहना था कि मैं साहित्य का आदमी नहीं हूँ, पाठक जरूर हूँ तब मेरी इस संस्था में क्या उपयोगिता होगी और संभावना के सदस्यों के दबाव में वे इंकार न कर सके। उनके नेतृत्व में चित्तौड़गढ़ में संभावना ने अनेक आयोजन किये जिनमें नामवर सिंह, काशीनाथ सिंह, स्वयं प्रकाश, अखिलेश, श्रीप्रकाश शुक्ल, जीवन सिंह सहित अनेक लेखक-साहित्यकार आए। बनास का प्रकाशन उनके परामर्श से शुरू हुआ था जो 2007 से आज तक निरंतर प्रकाशित हो रही है। शर्मा साहब से मेरा पहला परिचय पाठक मंच की एक गोष्ठी में हुआ था। संयोग रहा कि बेगूँ में खुले महाविद्यालय के वे पहले प्राचार्य थे और मैं पहला अध्यापक। उस छोटे से साधनहीन महाविद्यालय में अपने सुदीर्घ अनुभवों से शर्मा साहब ने एक स्वस्थ माहौल बनाने की कोशिश की। एक प्रसंग याद आता है जब विधायक घनश्याम जैन साहब ने अपने कोष से कुछ राशि महाविद्यालय में पुस्तकें खरीदने के लिए दी। शर्मा साहब ने मुझे जिम्मेदारी दी कि मैं अच्छी और आवश्यक पुस्तकों की सूची बनाऊँ। मैंने समाजशास्त्र के बारे में पूछा तो उन्होंने कहा कि वह सूची भी आप बनाएँगे। मैंने तुरंत कहा कि इस विषय की हिंदी में सबसे अच्छी किताबें रावत पब्लिकेशन से आई हैं लेकिन क्या उनका उपयोग हमारे बी ए के विद्यार्थियों के लिए संभव होगा। शर्मा साहब ने कहा कि अच्छी और महत्त्वपूर्ण किताबें मुश्किल से कॉलेजों में आती हैं, पाठ्य पुस्तकें और साधारण किताबें तो यहाँ तब भी आ जाएँगी जब आप और मैं इस महाविद्यालय में नहीं होंगे। और याद रखिए कि हम सिर्फ आज के विद्यार्थियों के लिए पुस्तकालय नहीं बना रहे हैं बल्कि आने वाली पीढ़ियाँ भी इसका उपयोग करेंगी। आखिर रावत पब्लिकेशन की सबसे अच्छी किताबें हमारे उस पुस्तकालय में आईं।

शर्मा साहब चित्तौड़ जिले के एक छोटे से गाँव संगेसरा के किसान परिवार से सम्बन्ध रखते थे। शिक्षा के प्रति उनका समर्पण उन्हें चित्तौड़ ही नहीं राजस्थान के अनेक शहरों कस्बों में ले गया। अपने अध्यापकीय जीवन में अपने सिद्धांतों और वैचारिक निष्ठाओं के कारण उन्हें कई बार स्थानांतरण का शिकार होना पड़ा लेकिन उन्होंने मनुष्य विरोधी विचारों की आलोचना नहीं छोड़ी। पढ़ने की उनकी ललक आयु बढ़ने पर भी कम नहीं हुई। वे समाजशास्त्रीय विषयों पर लोकप्रिय पुस्तकें भी चाव से पढ़ते थे। मेरे आग्रह पर उन्होंने सुनील खिलनानी और पूरनचन्द्र जोशी की किताबें पढ़ीं और उन पर लिखा भी। कहानीकार-उपन्यासकार स्वयं प्रकाश और अखिलेश की अनेक पुस्तकें वे पढ़ चुके थे। बेगूँ महाविद्यालय में नियुक्ति के दौरान ही उन्हें हृदयाघात हुआ लेकिन इससे पहले और बाद में भी लगातार वे स्वास्थ्य के प्रति जागरूक थे। प्रतिदिन सुबह की सैर और भोजन में सावधानी उनकी आदत में शुमार था। छोटे माने जाने वाले शहरों में के.सी. शर्मा जैसे लोगों की उपस्थिति और सक्रियता का महत्त्व तब समझ आता है जब हम अपने देश में पसरी सांस्कृतिक-अकादमिक जड़ता को देखते हैं। शर्मा साहब इस जड़ता से लड़ने वाले एक सक्रिय अकादमिशयन के रूप में हमेशा याद आते रहेंगे।

पल्लव

अपनी बात

क्या आज किसी को आलोचना चाहिए? आलोचना की जरूरत किसे है? साहित्य में सक्रिय नयी पीढी को देखकर लगता है कि उसे तो आलोचना की कोई जरूरत नहीं। फिर हमारा समाज? थोड़ा पीछे चलते हैं। याद कीजिये मुहल्ले वाले दिन और साइकिलें और ब्लेक एंड व्हाइट टीवी पर आता हमलोग या बुनियाद। तब यह दृश्य संभव था कि पड़ोस में चीख-चीखकर बीवी बच्चों को धमका रहे व्यक्ति को मोहल्ले वाले आकर बुरी तरह डाँट सकते थे। और अब? जिस तरह हमारे समाज और परिवार में आलोचना की जगह घटी है उसी तरह साहित्य में आलोचना का स्थान पुस्तक प्रशंसा या लेखन तारीफ ने ले लिया है। इसके कारण अज्ञात नहीं है। फिर भी बात करनी चाहिए और कुछ बातें ये हैं--

साहित्य का सृजन अब साहित्येतर कारणों से अधिक हो रहा है।

साहित्य लेखन पर बाजार का असर देखा जा सकता है।

इंटरनेट और नए संचार माध्यमों ने साहित्य के प्रसार के साथ दूसरी और तीसरी श्रेणी की प्रतिभाओं को भरपूर बढाया है।

विचारधारा की बहसों की छीजती जगह से रचना विवेक को क्षति पहुँची है।

फिर भी आलोचना की उपस्थिति है या किसी को आलोचना लिखना जरूरी लगता है तो उसका कारण यही हो सकता है कि आलोचक को इस परिदृश्य को सही सही देखने समझने की जरूरत लगती है। असल में आलोचना है क्या? आलोचना का अर्थ है हमारे समय की रचनाशीलता की पहचान करना और उसे रेखांकित करना। आलोचना से प्रशंसा की अपेक्षा करने वाले रचनाकार असल में सच्चाई से मुँह मोड़ लेना चाहते हैं, वे नहीं जानते की आलोचना सभ्यता समीक्षा है जिसका काम बहुत मुश्किल है। इन्सटेंट ग्रेटिफिकेशन की प्रवृत्ति साहित्य में खतरनाक ढंग से बढी है, यानी आज रचना छपे, कल समीक्षा, परसों आलोचना, तरसों पुरस्कार और अगले दिन 'हिन्दी साहित्य का इतिहास' नामक पुस्तक में इस रचना का ढंग से वर्णन हो। फेसबुक जैसे कृत्रिम संसार में ऐसा संभव है और जब रचनाशीलता ऐसी अपेक्षा आलोचना से करने लगती है तो नतीजे खतरनाक होते हैं। कुछ मासूम रचनाकार सोचते हैं कि भई मेरी तारीफ हो जायेगी तो इससे आलोचना का क्या नुकसान हो जाएगा? वे नहीं जानते कि सवाल नुकसान या फायदे का नहीं बल्कि संस्कार और कायदे का है।

बहुधा पुस्तक समीक्षा को आलोचना की शुरुआत माना जाता है। पुस्तक समीक्षा को घटिया दर्जे की आलोचना कहने वाले भी लोग हैं, लेकिन कौन लेखक है जो अपनी पुस्तक की समीक्षा न चाहे? सही है कि बाजार अब पुस्तक के क्षेत्र में भी है और इससे नहीं जा सकता। हर प्रकाशक चाहता है कि उसके द्वारा प्रकाशित पुस्तक की तारीफ हो ताकि लोग उसे खरीदें-पढ़ें। कुछ प्रकाशनों ने अपनी हाउस मैगजीन के साथ रिव्यू जर्नल भी निकाले हैं और आलोचना पत्रिकाएँ भी। अखबार, पत्रिकाएँ और दूसरे माध्यमों पर आ रही पुस्तक समीक्षा। इन सबसे मिलकर ही आज की पुस्तक समीक्षा के परिदृश्य को देखा जा सकता है।

बनास जन ने उपन्यास, कविता, कहानी, नाटक और कथेतर विधाओं की नयी कृतियों पर समीक्षा अंकों का प्रकाशन किया है। इधर की आलोचना पुस्तकों पर यह अंक उसी शृंखला की नयी कड़ी है। प्रयास यह रहा कि चर्चित-अचर्चित आलोचना पुस्तकों को पाठकों के समक्ष लाया जाए। इस काम में वरिष्ठ आलोचकों-समीक्षकों के साथ युवा शोधार्थियों और अध्यापकों ने मदद की है। आशा है पाठकों को यह अंक उपयोगी लगेगा।

पल्लव